नागपट्टिनम के इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट के परिसर में झूला झूलते बच्चे। चेन्नई की संस्था एक्सनोरा ने यूएसएड के सहयोग से खेल सुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं।

सुनामी के बाद खड़ा होता जीवन

आलेख: ए. वेंकट नारायण
चित्र: हेमंत भटनागर

स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सहायता संगठनों और सरकारी एजेंसियों की पहलकदमियों के परिणामस्वरूप सुनामी के एक बरस बाद तमिलनाडु के तटवर्ती क्षेत्रों में जीवन अपनी राह पर चल निकला है।

तमिलनाडु में मछुआरों के एक गांव में के. रेवती किताबों की जिल्दसाजी करके अपना गुजारा कर रही है। ऐसे सैकड़ों गांवों में 26 दिसंबर 2004 को सुनामी ने तबाही मचाई थी। किताबों पर जिल्द चढ़ाने के बाद रेवती सुनामी से प्रभावित लोगों को दी गई राहत राशि के 25,000 रुपयों से खरीदी गई मशीन से उनके किनारे काटती है। इस काम के ऑर्डर उसे अक्करपेट्टै के एक स्कूल से मिलते हैं। हर माह वह 2,000 रुपये कमाती है और अपने दो बच्चों को पढ़ा रही है। इससे उसके पति की आमदनी में भी इजाफा हो जाता है– विशेष रूप से जब मछलियां कम पकड़ी जाती हैं या जिन महीनों में मछली पकड़ने पर पाबंदी रहती है।

पूर्वी समुद्रतट पर सुनामी की लहरें घरों को बहा ले गईं, खेत डूब गए और तमिलनाडु में ही लगभग 1100 लोग मौत के मुंह में समा गए – उसके बाद से तमाम महिलाएं अपने परिवारों को पालने के लिए रेवती की तरह अनेक प्रकार के काम कर रही हैं। वे बेंत की टोकरियां बुन रही हैं, जिल्दसाजी कर रही हैं, मोमबत्तियां बना रही हैं और कपड़े सिल रही हैं। यह हुनर उन्होंने स्वयंसेवी संस्थाओं से सीखा जिन्होंने हजारों बेघर लोगों के पुनर्वास में मदद की।

उस काले रविवार को टूटे सुनामी के कहर के बाद सैकड़ों स्वयंसेवी तथा सरकारी संस्थाएं घरों व स्कूलों का पुनर्निर्माण कर रही है, सिंचाई के तालाबों की सफाई कर रही हैं, मछली मारने के काम आने वाली नावों की मरम्मत कर रही हैं और व्यावसायिक प्रशिक्षण दे रही हैं ताकि सुनामी से प्रभावित लोग नए सिरे से अपना जीवन शुरू कर सकें। भारत के इतिहास में आपदा राहत की यह सबसे बड़ी कार्रवाई है। अमेरिकी नागरिकों ने निजी तौर पर, तथा कॉर्पोरेशनों व अमेरिकी सरकार ने भारत की मदद की। संकट की इस घड़ी में राहत कार्य को तेजी से चलाने के लिए अमेरिकी तथा भारतीय नागरिकों ने कंधे से कंधा मिला कर काम किया।

समुद्र तट के नागपट्टिनम जिले में सुनामी ने सबसे अधिक तबाही मचाई थी, और सबसे अधिक लोग यहीं मारे गए। प्रॉजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल ने इस जिले में यूएसएड द्वारा दी गई 440,000 डॉलर की दानराशि से 875 परिवारों के पुनर्वास में मदद की। अमेरिकी सरकार की ओर से केयर, कैथोलिक रिलीफ सर्विसेज (सी आर एस), गोल, फूड फॉर द हंग्री, एक्टेड तथा एक्सनोरा जैसी संस्थाओं ने

Courtesy Prince family

युवा अमेरिकी स्वयंसेवक

लॉरीन एलिसे प्रिंस

क्रिसमस के अगले दिन जिस सुनामी ने दक्षिण एशिया में तबाही मचाई थी, यों तो उसका अस्थाई असर सभी अमेरिकी नागरिकों पर पड़ा लेकिन मेरी जिंदगी उसने सदा के लिए बदल दी। जब हमने पहली बार इस प्राकृतिक आपदा के बारे में सुना तो तुरंत दुनिया भर के असंख्य लोगों की तरह मैंने और मेरे परिवार ने भी टेलीविजन पर अपनी आंखें गड़ा दीं। पलक झपकते ही हजारों लोगों को लील जाने वाली उस विनाशलीला पर विश्वास करना मेरे लिए कठिन था।

समाचारों में बार-बार आने वाला चेन्नई नाम मेरे परिवार के लिए एक विशेष नाम बन गया। मेरी मां ने कभी अटलांटा, जार्जिया की एक महिला बेकी डगलस के साथ काम किया था। उन्होंने हाल ही में चेन्नई में एक अनाथालय खोला था। मां के दिमाग में अचानक कौंधा कि अनाथालय के जरिए सुनामी से प्रभावित लोगों की मदद की जा सकती है। फोन पर बेकी से बात करने पर पता चला कि समुद्र तट से कुछ सौ मीटर की दूरी पर ही अनाथालय होने के बावजूद सभी बच्चे सुरक्षित हैं लेकिन पास के ही दूसरे अनाथालय के सभी बच्चे मारे गए हैं। हमें यह भी पता चला कि तट से लगे मछुआरों के सभी गांवों की आर्थिक व्यवस्था बर्बाद हो गई है। जब हमने उनसे पूछा कि उन लोगों की सहायता करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है तो बेकी ने जवाब दिया कि दीर्घकालीन भलाई इस बात पर निर्भर करती है कि वे समुद्र में वापस लौट कर मछलियां पकड़ने लायक हो सकें। हमने पूछा, ''इसमें कितना खर्चा आएगा?'' बेकी ने बताया कि एक गांव के 500 मछुआरों की नावों की मरम्मत या नई नावें खरीदने में 11,000 डॉलर का खर्चा आएगा। छुट्टियों के बाद जब मैं घर लौटी तो मैंने अपने हेडमास्टर से बात की और द बुलिस स्कूल में दान राशि जमा करने का अभियान चलाने की अनुमति

फोटो कैप्शन: लॉरीन एलिसे (इली) प्रिंस ने अपना समय सुनामी पीड़ितों की सेवा में बिताया। (चित्र में) चेन्नई के राइजिंग स्टार आउटरीच अनाथालय के बच्चों के साथ इली।

बांएं: अक्करपेट्टै के एक स्वयं-सहायता समूह की अगुआ के. रेवती (एकदम दांएं) टोकरी बुनना सिखा रही हैं।

दांएं: नागपट्टिनम के एक कामचलाऊ स्कूल में बच्चे

नीचे: नागपट्टिनम के एक अस्थायी पुनर्वास केंद्र में कुशन कवर सिलती ज़रीना (बांएं) और नसीमा। वैकल्पिक आजीविका प्रशिक्षण की यह योजना यूएसएड के सहयोग से चलती है।

यूएसएड से प्राप्त सहायता राशि की मदद से दीर्घ तथा मध्य अवधियों के पुनर्वास कार्यक्रम शुरू किए। उन्होंने विस्थापित परिवारों के लिए अस्थाई घरों का निर्माण किया है, मछली मारने के काम आने वाली नावों की मरम्मत कराई है, गांवों में सफाई और पानी की आपूर्ति का सुधार किया है, 'काम के बदले धन' योजना के तहत रोजगार मुहैया कराया है और स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद की है।

मछली पकड़ना और खेतीबाड़ी समुद्रतटीय क्षेत्रों के दो मुख्य व्यवसाय हैं। इनकी स्थिति में सुधार हो रहा है। साथ ही सुनामी के बाद महिलाओं तथा बेरोजगारों को भी रोजगार के नए अवसर मिले हैं।

कैथोलिक रिलीफ सर्विसेज (सी आर एस) जैसी कुछ स्वयंसेवी संस्थाएं दीर्घकालीन पुनर्वास तथा लोगों का जीवन स्तर सुधारने की योजनाओं पर काम कर रही हैं। केयर ने विशेष रूप से ध्यान रखा कि कोई भी बच्चा अशिक्षित न रहे। उन्हें सुनामी के बाद ऐसे बच्चों को भी स्कूल भेजने में मदद मिली है जो पहले स्कूल नहीं जाते थे।

एजेंसी फॉर टैक्निकल कोआपरेशन एंड डेवलपमेंट अर्थात् 'एक्टेड' ने 300,000 डॉलर के अमेरिकी अनुदान का उपयोग करके 150 स्वयं-सहायता समूहों के जरिए करीब 2280 परिवारों को पुन: व्यापार शुरू करने के लिए छोटे-छोटे ऋण दिलाए। स्वयं-सहायता अभियान का लाभ मुख्य रूप से महिलाएं उठा रही हैं। यह ग्रामीण आबादी के आर्थिक उत्थान का एक नया जरिया साबित हो रहा है। इन समूहों की सफलता के पीछे महिलाओं की बचत की आदत का बड़ा हाथ है जो काफी पैसा बचा लेती हैं। अकेले नागपट्टिनम में ही 6,350 स्वयं-सहायता समूह हैं। नागपट्टिनम के जिलाधिकारी जे. राधाकृष्णन कहते हैं, ''बैंक तथा अन्य वित्तीय संस्थाएं इन्हें कम ब्याज पर ऋण मुहैया करा सकते हैं।''

सुनामी के बाद मछुआरों की नावें और मछली पकड़ने के जाल तो नष्ट हो ही गए, समुद्र में जाने की उनकी हिम्मत भी टूट गई थी। मछुआरों की बस्तियों में महिलाएं आमदनी के नए जरिए खोजने लगीं। लेकिन उन्हें कोई हुनर नहीं आता था। कैथोलिक रिलीफ सर्विसेज (सी आर एस) ने भांप लिया कि किसी और व्यवसाय के ज्ञान की कमी तथा काम का अनुभव न होने के कारण कर्ज के भार से दबी महिलाओं और लड़कियों की तस्करी या अन्य तरीकों से उनके शोषण का खतरा पैदा हो सकता है। तब इसने 5 गांवों में 100 महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए। मई के प्रारंभ में वित्तीय प्रबंधन के प्रशिक्षण के लिए 50 महिलाओं के कोर ग्रुप का चुनाव किया गया।

20-वर्षीय माला नागराज के पिता को सुनामी ने छीन लिया था, वह महिलाओं को विभिन्न प्रकार के ज्ञान का प्रशिक्षण देने वाले एक स्वयं-सहायता समूह का नेतृत्व करती है। उसकी मां मछलियां बेचती हैं जबकि माला ने अचार बनाने का प्रशिक्षण लिया और आज मांग तथा मौसम के अनुसार 2,500 से 3,000 रुपये तक कमा रही है।

''मैं बहुत प्रभावित हूं। इन महिलाओं को रोज कितने काम करने पड़ते हैं- घर की देखभाल, पानी

मांगी। यह प्राइवेट स्कूल वाशिंगटन डी.सी. के एक उपनगर में है। उन्होंने अनुमति दे दी। तीन दिन बाद मैंने स्कूल के सभी छात्रों से इस अभियान में हिस्सा लेने की अपील की। हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब हमने देखा कि अभियान के पहले ही दिन 4,000 डॉलर से अधिक की दानराशि जमा हो गई। सप्ताहांत तक हमें अपने लक्ष्य के दुगुने से भी अधिक दान राशि प्राप्त हो गई। अब तक हम 100,000 डॉलर से अधिक की सहायता एकत्र कर चुके हैं। यह पूरी दान राशि सीधे भारत भेज दी गई है।

मैंने और मेरे आठ सहपाठियों, हेडमास्टर तथा कई अन्य लोगों ने अपने-अपने खर्चे पर वसंतकालीन छुट्टियां भारत में बिताने का निश्चय किया। जितना हमने दान जमा करने में सीखा था उससे कई गुना ज्यादा भारत में रह कर सीखा।

हम एक सप्ताह चेन्नई में रहे। वहां हम आधा समय तो अनाथालय और उस स्कूल में रहते थे जिसकी ओर सबसे पहले हमारा ध्यान गया था। बाकी का आधा समय हम कुष्ठ रोगियों की तीन कालोनियों में बिताते थे। अनाथालय में हम सबके लिए काम करना बहुत आसान था क्योंकि सभी बच्चे बहुत प्यारे थे। इतना कम समय वहां रहने के बावजूद उन्हें छोड़ कर जाना बहुत कठिन था और जाते समय हम सभी रो रहे थे। कुष्ठ रोगियों की कालोनियों में काम करना काफी मुश्किल था लेकिन अंत में लगा यह बहुत बड़ी सेवा थी। हम में से कोई भी कभी किसी कुष्ठ रोगी के पास नहीं गया था। शुरू में उन्हें छूने की बात तो दूर हमें उन के पास जाते भी डर लगा। प्रेम से सेवा करने के आए लिए विदेशी लोगों को देख कर वे बेहद उत्साहित थे, यह देख कर हमारा डर तुरंत जाता रहा। हमने वहां सामुदायिक सेवा की, उन्हें आत्म-निर्भर बनाने के लिए केले के पौधे लगाए। असल में, उनकी व्यक्तिगत सेवा ही सबसे बड़ी सेवा थी। मेरी यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि और मेरी जिंदगी का सबसे मार्मिक क्षण वह था जब मैंने एक ऐसी महिला के बालों में कंघा करके उन्हें संवारा जिसके हाथ-पैर कुष्ठ रोग से गल कर खत्म हो गए थे। तब तक मैंने कभी अनुभव नहीं किया था कि प्रेम के मामूली स्पर्श से किसी को कितना कुछ दिया जा सकता है। □

लेखिका: *16 वर्ष की लॉरीन एलिसे प्रिंस द बुलिस स्कूल, पोटोमैक, मेरीलैंड की छात्रा है।*

ऊपर: नागपट्टिनम जिले के तिरूमल्लावास में यूएसएड के सहयोग से प्रॉजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल द्वारा बनाए गए एक घर में खाना पक रहा है।
ऊपर और सामने के पृष्ठ पर: अपने जालों की मरम्मत करते और पकड़ी मछलियों को बांटते मछुआरे। नागपट्टिनम के मच्छी बाजार में जीवन अपनी राह पर चल निकला है।

लाना, खेतों में काम करना। लेकिन, यह सब कुछ करते हुए भी उन्होंने अतिरिक्त काम के लिए समय निकाल लिया,'' एक्टेड की कार्यक्रम समन्वयक मीरा ग्रेटियर कहती हैं।

संयुक्त राष्ट्र के दूत के रूप में नागपट्टिनम की यात्रा के बाद अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने तमिलनाडु सरकार द्वारा आर्थिक पुनर्वास के लिए अपनाए गए तरीकों की सराहना की। उन्होंने जिला स्तर पर सरकारी बचाव तथा राहत कार्य का नेतृत्व कर रहे राधाकृष्णन की विशेष रूप से प्रशंसा की। क्लिंटन ने कहा, ''जिलाधिकारी के व्यवहार से मैं बहुत प्रभावित हूं। वे एक युवा व्यक्ति के रूप में सोचते हैं।''

''हम जानते थे कि नष्ट नावों, जालों और घरों को फिर से बनाने के अलावा भी हमें बहुत कुछ करना होगा, इसलिए हमने सभी ग्रामीणों को और विशेष रूप से महिलाओं को साथ लेकर काम शुरू कर दिया,'' राधाकृष्णन बताते हैं।

कुछ महिलाएं अब भविष्य की योजना बना रही हैं– ऐसे भविष्य की जिसमें वे अपने परिवार की आमदनी बढ़ाने की अधिक जिम्मेदारी संभालें और अपनी सामाजिक हैसियत बढ़ा सकें। कुड्डालोर जिले के देवनामपट्टिनम गांव में पांडिचेरी मल्टिपर्पज सोशियल सर्विस सोसाइटी ने कैथोलिक

मदद के लिए बढ़ा
अमेरिकी हाथ

सुनामी से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए अमेरिका के आम नागरिकों, सरकार, व्यापारियों तथा परोपकारी संस्थाओं ने क्षेत्रीय आपदा के लिए मुक्तहस्त से सहायता दी। चंद महीने के भीतर ही अमेरिकी नागरिकों ने राहत एजेंसियों को निजी तौर पर 1 अरब डॉलर की राशि दान के रूप में दी। अमेरिकी सरकार ने राहत और पुनर्निर्माण के लिए 6.30 करोड़ डॉलर की सहायता स्वीकृत की, जिसमें अमेरिकी सेना की मानवीय सेवा सम्मिलित नहीं है। भारत, इंडोनेशिया, श्रीलंका आदि सभी सुनामी प्रभावित देशों में तत्काल राहत तथा पुनर्वास की कार्यवाही की गई।

राष्ट्रपति जॉर्ज डब्लू. बुश ने सुनामी से प्रभावित क्षेत्रों की जरूरतों का पता लगाने तथा मानवता की सेवा के इस महाप्रयास के अभियान का नेतृत्व करने के लिए भूतपूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज एच. डब्लू. बुश तथा बिल क्लिंटन का सहयोग लिया।

कॉर्पोरेट संस्थाओं ने तुरंत सहायता दी। सबसे पहले दान देने वाली संस्थाएं हैं: शेव्रान टैक्साको कॉर्प, जनरल मिल्स इंका., लेवी स्ट्रॉस एंड कं., एबट लेबोरेट्रीज, जनरल इलैक्ट्रिक, प्रॉक्टर एंड गैंबल, जॉनसन एंड जॉनसन, फ़ाइज़र, कोकाकोला, एक्सॉन मोबिल, सिटीग्रुप, वाल-मार्ट, अमेज़ॉन.कॉम, नाइक, अमेरिकन एक्सप्रैस, पेप्सिको, सिस्को सिस्टम्स तथा फेडरल एक्सप्रेस। इसके अतिरिक्त अनेक अमेरिकी न्यासों तथा परोपकारी संस्थाओं जैसे बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, कार्नेगी फाउंडेशन, यूनिसेफ और ग्लोबल बिजनेस डायलॉग ने भी तत्काल मदद का हाथ बढ़ाया।

हॉलीवुड कलाकार सांड्रा बुलॅक व लियोनार्डो डी कैप्रियो और गायक विली नेल्सन जैसे प्रसिद्ध अमेरिकी नागरिकों ने भी दानराशि एकत्र की। कैथोलिक रिलीफ सर्विसेज (सी आर एस), केयर, वर्ल्ड विजन, ऑक्सफैम और हैबिटैट फॉर ह्यूमेनिटी जैसी अंतरराष्ट्रीय स्वयंसेवी संस्थाओं ने सुनामी से सुरक्षित बच गए लोगों के लिए घरों का पुनर्निर्माण किया तथा 'काम के बदले धन' मुहैया कराया। कार्पोरेट दानशीलता का एक ही उदाहरण काफी है: भारत में फोर्ड इंडिया ने भारतीय औद्योगिक संघ (सी आइ आइ) के साथ मिल कर तमिलनाडु के कांचीपुरम जिले में पनैयूर पेरिया कुप्पम गांव के मछुआरों के 225 परिवारों को गोद लिया। मछुआरों को आउटबोर्ड इंजन वाली 25 फाइबर नावें दी गईं। दिन में शिशुओं की देखभाल तथा व्यावसायिक कार्यों का प्रशिक्षण देने के लिए केन्द्र खोले गए ताकि महिलाएं नए कौशल सीख सकें।

अपनी नई जिंदगी के पुनर्निर्माण का प्रयास कर रहे लाखों लोगों के मन में अमेरिका के मददगार हाथ और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के सहायता संकल्प ने एक नई आशा का संचार किया है।

— वेंकट नारायण

REPAIRED By:-
PGI INDIA USA

आपदा में जरूरी है

टीम भावना

जे. राधाकृष्णन से एक बातचीत

तमिलनाडु के नागपट्टिनम जिले के जिलाधिकारी जे. राधाकृष्णन दिसंबर 2004 में सुनामी से हुई तबाही के बाद से राहत और पुनर्वास की महत्वाकांक्षी परियोजना में जुटे हुए हैं। सुनामी के कहर के तुरंत बाद ही आपदा प्रबंधन में इनके अनुभव को देखते हुए इस 37 वर्षीय युवा प्रशासक को तबादला करके नागपट्टिनम भेज दिया गया था।

वे तबाही के कुछ ही घंटों के भीतर प्रभावित इलाकों में सबसे पहले पहुंचने वाले चंद अधिकारियों में थे और वहां पहुंचते ही उन्होंने राहत सामग्री वितरित की, शवों को उठाने का प्रबंध किया और हजारों लोगों की मदद की। संयुक्त राष्ट्र के विशेष राजदूत के रूप में नागपट्टिनम की यात्रा पर गए अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने कहा, वे ''जिलाधिकारी की सेवा भावना'' और विशेष रूप से उनके द्वारा महिलाओं के स्वयंसेवी समूहों के लिए स्थापित आर्थिक मदद के नए तरीकों से बहुत प्रभावित हुए।

जून में राधाकृष्णन ने अमेरिका की यात्रा की जहां वह यू एस फेडरल इमर्जेंसी मैनेजमेंट एजेंसी (फेमा) के सदस्यों से मिले और वाशिंगटन डी.सी., सीएटल, हॉस्टन तथा होनोलुलु में आपदा प्रबंधन की बारीकियों पर चर्चा करने के लिए व्याख्यान दिए।

ऊपर: नागपट्टिनम के जिलाधिकारी जे. राधाकृष्णन अपने दफ्तर में।
दांएं और एकदम दांएं: नागपट्टिनम जिले में ही 79 जगहों पर भूकंपरोधी विशेषताओं वाले 17,300 से भी अधिक पक्के मकान बन रहे हैं, तैयार दोमंजिला भवन रहबासियों का इंतजार कर रहा है।

आपके जिले में पुनर्वास का कार्य कैसा चल रहा है?

नागपट्टिनम सुनामी की त्रासदी से सबसे बुरी तरह प्रभावित जिला है। जिले में जानमाल का सबसे अधिक नुकसान हुआ। हमने त्रिमुखी रणनीति अपनाई। पहली यह कि बड़ी संख्या में गैर सरकारी संस्थाएं मदद के लिए आगे आईं और वे एकजुट होकर प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं। वे मछुआरों, किसानों व अनाथों के बीच काम करते हुए उनके दीर्घकालीन पुनर्वास के प्रयास कर रही हैं। आवास व्यवस्था, स्वास्थ्य, साफ-सफाई तथा पीने के पानी की समस्याओं पर भी ध्यान दे रही हैं। महिलाओं और विशेष रूप से विधवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वे अतिरिक्त आमदनी कमा कर बेहतर जिंदगी जी सकें।

दूसरी यह कि गैर सरकारी संस्थाओं की मदद से सरकार सड़कों, पुलों, स्थाई स्कूलों, मकानों, तथा मछली संग्रह केन्द्रों का निर्माण कर रही है। इस कारण मछुआरों के लिए सुनामी की त्रासदी के दो-तीन माह के भीतर ही फिर से काम पर जाना संभव हो गया है। अब मछली पकड़ने का काम लगभग पहले की तरह किया जा रहा है।

तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण रणनीति है- स्थानीय लोगों की भागीदारी। इतने बड़े स्तर पर किए जा रहे पुनर्वास के प्रयास में हम स्थानीय लोगों की राय, उनकी भावनाओं और भूमिका की अनदेखी नहीं कर सकते।

आज भी हजारों परिवार अस्थाई घरों में रह रहे हैं जिनमें जीवन खासा कठिन है। आप उन्हें उन स्थाई घरों में कब तक भेज पाएंगे जहां बेहतर सुविधाएं होंगी?

हमने 300 हैक्टेयर भूमि का अधिग्रहण किया है जिसमें इस वर्ष 2,700 परिवारों के लिए पक्के घर बनाए जा रहे हैं। यह निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं और परियोजना पर तेजी से काम चल रहा है। हमारी योजना है कि सुनामी की त्रासदी का एक साल पूरा होते-होते हम कुछ परिवारों को पक्के घरों में भेज दें। मुझे खुशी है कि अक्करपेट्टै में 40 गैर सरकारी संस्थाएं घर बनाने के काम में जुटी हुई हैं।

"पांडिचेरी मल्टीपरपज सोशियल सर्विस सोसायटी कम्प्यूटर शिक्षा के ढेरों अवसर उपलब्ध करवा रही है। यह प्रशिक्षण पहले स्थानीय युवाओं के लिए दुर्लभ ही थे। इंटरनैट के जरिए हम सारी दुनिया से जुड़े हैं, इससे हमारे डिजाइनर फैशन के नए चलन जान पाते हैं।"

एफ. क्रिस्टॉफर
मुख्य समन्वयक पां.म.सो.स.सो.

नागपट्टिनम के इस कस्बे में भयंकर तबाही और जानमाल का नुकसान हुआ था। निकट भविष्य में निजी और सार्वजनिक सहयोग से 79 स्थानों पर 17,361 पक्के घरों का निर्माण करने की हमारी योजना है।

अमेरिका यात्रा का आपका अनुभव कैसा रहा?

मैंने अमेरिकी अधिकारियों से आपदा प्रबंधन के बारे में बहुत कुछ सीखा आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति कैसे करें, आपदा प्रभावित लोगों को सुरक्षित क्षेत्रों में कैसे ले जाएं, घायलों की देखभाल कैसे करें, शवों को कैसे हटाएं, दूषित पानी से फैलने वाली बीमारियों से बचाव कैसे करें, आदि। हमने आपदा की स्थिति में हमारे और उनके यहां की राहत प्रणालियों और राहत कार्य अनुभवों पर चर्चा की। अमेरिकी अधिकारियों ने हमारे प्रयासों को पसंद किया।

किसानों और समाज के अन्य वर्गों के लोगों को ऐसा लगता है कि जैसे पुनर्वास कार्यक्रम में मछुआरों की तुलना में उनकी अनदेखी हुई है। इस बारे में आपको क्या कहना है?

असल में मछुआरों को नावों, जालों और अस्थाई घरों के रूप में जो सहायता मिली वह साफ दिखाई देती है जबकि किसानों और कृषि मजदूरों को दी गई सहायता दिखाई नहीं देती। सच्चाई यह है कि सुनामी से प्रभावित सभी लोगों की किसी न किसी पुनर्वास कार्यक्रम के तहत सहायता की गई है। किसानों को खेतों में से रेत हटाने के लिए 12,000 रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से दिए गए। इसी तरह नमक बनाने वालों को भी अच्छी मदद मिली। इसके अलावा खरीफ की फसल बोने के लिए बीज मुफ्त दिए गए। जिन कृषि मजदूरों ने व्यावसायिक प्रशिक्षण लिया उन्हें भी रोजी-रोटी कमाने के बेहतर साधन मिले।

अब आगे की क्या चुनौतियां हैं और इस तरह की त्रासदियों से भविष्य में कैसे निबटना चाहिए?

अगर इस प्रयास में सभी स्थानीय निवासियों का सहयोग मिल जाए तो ऐसी समस्या से सफलतापूर्वक निबटा जा सकता है। इस स्तर की प्राकृतिक आपदा से निबटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। मैं जोर देकर कहूंगा कि वैश्वीकरण केवल आर्थिक विकास के लिए नहीं बल्कि ऐसी त्रासदियों से निबटने के लिए भी है। यू एस इंटरनेशनल सिटी एंड कंट्री मैनेजर्स एसोसिएशन के ''सिटी लिंक'' कार्यक्रम के तहत हम सहभागिता बढ़ा रहे हैं और समस्याओं को हल करने के लिए विभिन्न तरह के प्रयासों के बारे में एक-दूसरे के अनुभवों से सीख रहे हैं। हर आपदा अपने आप में अलग प्रकार की होती है इसलिए उससे निबटने के प्रयास भी भिन्न होते हैं। मेरे विचार में टीम भावना से काम करना जरूरी है। इसलिए इस पर सर्वाधिक बल दिया जाना चाहिए। □

Courtesy Nagapattinam Collectorate

रिलीफ सर्विसेज (सी आर एस) तथा यूएसएड के सहयोग से 165 बालिकाओं तथा 50 युवकों को कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिया और उन्हें माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, एक्सेल तथा अन्य सॉफ्टवेयर का उपयोग सिखाया।

एक्टएड ने करीब 150 समूहों को 50,000 रुपये का अनुदान देकर छोटी वित्तीय योजनाओं की शुरूआत की। प्रत्येक समूह एक कोष बनाता है और फिर लोगों को छोटे-छोटे ऋण देता है जिन्हें वह धनराशि 18 माह के भीतर कोष में वापस लौटानी पड़ती है। अधिकांश सदस्य आर्थिक सुविधाओं से वंचित वर्ग के हैं जिनमें खेतिहर मजदूर भी सम्मिलित हैं जो अन्यथा मछली पकड़ने का काम करते हैं। खेतों में समुद्र का पानी भर गया और मजदूरों के पास कोई काम नहीं रहा। यूएसएड की सहायता राशि से महिलाओं ने बकरियां तथा दुधारू पशु खरीदे ताकि सहकारी संस्थाओं को दूध बेचकर धन कमा सकें। के. शांति प्रतिदिन दूध बेचकर 50-60 रुपये तक कमा लेती हैं। ''महिलाओं की भागीदारी का लाभ पूरे परिवार को मिलता है। इससे आमदनी बढ़ती है। यह आजीविका कमाने का कार्यक्रम है जो बिक्री के लिए दुग्ध सहकारी समितियों से जुड़ा है,'' ग्रेटियर कहती हैं।

तीन बच्चों की मां एम. मंजुला एक स्वयं-सहायता समूह की सचिव हैं जो अपने सदस्यों को छोटे-छोटे ऋण देता है। एम. मंजुला ने मदुरै स्थित संस्था 'धन फाउंडेशन' से हिसाब-किताब लिखना सीखा। उनके पति एक मंदिर में पुजारी हैं और उनकी कमाई से पति की आमदनी बढ़ रही है। अन्य समूहों की ही तरह मंजुला का स्वयं-सहायता समूह भी सदस्यों के लिए ब्याज की दर स्वयं तय करता है। ऋण आपातकालीन चिकित्सा, शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए दिए जाते हैं।

सुनामी ने किसानों को भी बुरी तरह प्रभावित किया। काफी बड़े भूभाग में बाढ़ आ गई, समुद्र के पानी से फसलें बर्बाद हो गईं या भूमि खारी हो गई। लोगों के पास न पैसा था न काम। तब अमेरिकी अनुदान से 'गोल' ने सुनामी के कारण नमक बनाने के खत्तों में भरी रेत और मिट्टी को निकालने में नमक उत्पादकों की मदद की। इस तरह उस क्षेत्र में नमक का कारोबार फिर से शुरू हो सका। 'गोल' ने किसानों की आजीविका का प्रबंध करने के लिए उन्हें धान के बीज भी उपलब्ध करवाए। अक्कारापेट्टै में 'केयर' ने रेत से भरे तालाबों की सफाई और खेतों की जुताई के जरिए धन कमाने में

“शुरू में जब एक्सनोरा की टीम हमारे यहां आई तो पर्यावरण और साफ-सफाई के बारे में उनकी बातें मानने को लोग तैयार नहीं थे। लेकिन जागरूकता बढ़ने के बाद, खासतौर पर स्त्रियों और बच्चों के बीच, हमारे गांव के सभी लोगों ने इस अवधारणा को अपना लिया। गांव को साफ-सुथरा रखना जरूरी है, आगे चलकर इसके बहुत फायदे होंगे।”

आर. सुब्बरायन
पलैया पलैयम के पंचायत अध्यक्ष

ऊपर: यूएसएड द्वारा वित्तपोषित एक्सनोरा पर्यावरण प्रबंधन परियोजना के तहत पलैया पलैयम के आर. सुब्बरायन (बांएं से दूसरे) जैविक और अजैविक कूड़े को अलग-अलग रखने के लिए स्त्रियों को लाल और हरी बाल्टियां दे रहे हैं।

बांएं: एक्टेड की कार्यक्रम समन्वयक मीरा ग्रेटियर (बांएं से दूसरी) यूएसएड की सहायता से एक्टेड द्वारा चलाए जा रहे आजीविका कार्यक्रम के तहत दुधारू गाएं प्राप्त करने वाली के. शांति (बांएं) और अन्य स्त्रियों के साथ।

लोगों की मदद की। इसी तरह तालाबों को गहरा करने, सिंचाई की नालियों के निर्माण, सीढ़ियों के निर्माण, खरपतवारों और झाड़ियों को उखाड़ना, जल स्रोतों की सफाई, औषधीय पौधों की खेती आदि के कामों से 1900 परिवार लाभान्वित हुए। केयर ने दो तालाबों में खारे पानी के उपचार और सफाई का काम भी शुरू किया है।

चैन्नई स्थित एक्सनोरा ग्रुप ने यूएसएड की अनुदान राशि से रीसाइक्लिंग कार्यक्रम शुरू किया है। इसने कचरा-प्रबंधन की अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करके नागपट्टिनम नगर और उसके आसपास के गांवों में सारे कचरे से कंपोस्ट खाद बनाना शुरू किया ताकि उन इलाकों में कूड़ा-कचरा न रहे। एक्सनोरा ने कूड़ा-कचरा जमा करने वालों के लिए 15 रिक्शे और 1100 बिन खरीदे ताकि घर-घर से कूड़ा जमा किया जा सके। हर परिवार से गीला व सड़ने लायक कूड़ा अलग करके हरी बाल्टी में जमा करने का अनुरोध किया जाता है। न सड़ने वाला सूखा कूड़ा लाल बाल्टी में जमा किया जाता है जिसे कबाड़ के रूप में बेचा जा सकता है। नागपट्टिनम जिले में ही 1200 परिवारों के गांव पलैया पलैयम के प्रधान आर. सुब्बरायन ने एक्सनोरा तथा यूएसएड के प्रयास का स्वागत किया। इसकी सफलता के लिए उन्होंने गांव के निवासियों, विशेष रूप से महिलाओं के लिए अनेक कार्य गोष्ठियों का आयोजन कराया ताकि उन्हें रसोई से निकले कचरे के उपयोग तथा उसके खतरों के बारे में बताया जा सके। बच्चों को भी पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी जाती है।

वेदारन्यम में समुद्र का पानी खेतों में भर गया था जिससे वह भूमि खारी हो गई। ‘गोल’ ने हेल्पेज इंडिया और भारती वुमन डेवलपमेंट सेंटर के साथ मिल कर उनका खारापन दूर करने में मदद की। इस समूह ने 3000 रुपए प्रति हैक्टेयर की लागत पर 122 हैक्टेयर भूमि से रेत हटाई। उसके बाद कोयंबटूर में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में मिट्टी के नमूनों की लवणीयता की जांच की गई जिससे किसानों को यह जानकारी मिल सकी कि उस भूमि में खेती की जा सकती है। तब किसानों ने उसमें धान उगाया।

वेदारन्यम से करीब एक किलोमीटर दूर कामेश्वरम गांव की 72 वर्षीय भागवताम्माल ऐसी ही किसान हैं। वे धान की कम सिंचाई मांगने वाली किस्म उगाती हैं क्योंकि उनके पास सिंचाई का साधन नहीं है। इस फसल से उनका गुजारा मुश्किल से ही चलता है। वह बताती हैं, ‘‘मैंने तो फसल उगा पाने की उम्मीद छोड़ दी थी, लेकिन सरकार तथा गैर सरकारी संस्थाओं ने आश्वासन दिया है कि इस वर्ष फसल अच्छी होगी।’’

सुनामी से कई सफलता कथाएं जुड़ी हैं। उस भयंकर प्राकृतिक विपदा से निबटने के लिए तमिलनाडु के तटवर्ती इलाकों के निवासियों और समुदायों द्वारा किए गए स्थानीय प्रयासों ने उनकी हिम्मत बढ़ा दी है। फिर भी, सुनामी के एक साल बाद लगभग 1,00,000 भारतीय आज भी विस्थापित हैं और अस्थाई घरों में रह रहे हैं। राहत कार्य जारी है। अमेरिकी तथा भारतीय लोग मिल कर इन प्रभावित अस्थाई समुदायों को स्वस्थ व सुखी रखने और उन्हें भविष्य की विपदाओं का सामना करने के लिए तैयार रहने की शिक्षा दे रहे हैं। साथ ही उन्हें यह भी बता रहे हैं कि ऐसी आपदाओं से प्रभावित शहरों के निवासियों ने किस तरह उनका सामना करके नए जीवन की शुरूआत की और जीवित रहे। □

आपदाओं की

चेतावनी

मुहैया कराता अमेरिकी केंद्र

चेरिल पेलेरिन

पिछले बरस दिसम्बर में हिंद महासागर में आए सुनामी के बाद से प्रभावित देश हवाई के चेतावनी केंद्र से सूचनाएं ले रहे हैं।

हिंद महासागर क्षेत्र के सुनामी प्रभावित राष्ट्र कई तरह की प्राकृतिक और अन्य आपदाओं के लिए अपने खुद के अग्रिम चेतावनी तंत्र स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। फिलहाल हवाई स्थित यू.एस. पैसिफिक सुनामी वार्निंग सेंटर (अमेरिकी प्रशांत सुनामी चेतावनी केंद्र) सुनामी के खतरों से बचाव के लिए इस और अन्य क्षेत्रों को अंतरिम तौर पर अग्रिम चेतावनी मुहैया करा रहा है।

यह चेतावनी केंद्र होनोलूलू के पास एवा तट पर एक मंजिला इमारत में चल रहा है जो सफेद सीमेंट के रंगीन ब्लॉकों से बनी है। यह केंद्र एनओएए (राष्ट्रीय महासागरीय एवं वायुमंडल प्रशासन) की राष्ट्रीय मौसम सेवा का हिस्सा है। यह प्रशांत महासागर से कुछ ही दूर है और सुनामी से बचाव के लिए बने निर्जन क्षेत्र के मुहाने पर मौजूद है। हर फोन पुस्तिका में इसका नक्शा प्रकाशित किया जाता है।

केंद्र के निदेशक चार्ल्स 'चिप' मेक्रीरी कहते हैं कि कुछ साल पहले तक इस परिसर पर प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय एवं दूरस्थ स्थानों के लिए सुनामी चेतावनी केंद्र के रूप में काम करने की जिम्मेदारी थी। 'लेकिन हिंद महासागर में आई आपदा के बाद हम इस क्षेत्र में चेतावनी सुविधा मुहैया होने तक इसके लिए अंतरिम चेतावनी केंद्र के रूप में काम कर रहे हैं। यह काम हम जापानी मौसम एजेंसी के साथ मिलकर कर रहे हैं जो हिंद महासागर क्षेत्र की हलचलों के लिए बुलेटिन (सुनामी संबंधित) जारी करने का काम कर रही है।'

यह केंद्र विश्व के ज्यादातर हिस्से पर नजर रखता है लेकिन यहां कर्मचारियों की संख्या कम है। इसमें मेक्रीरी के अलावा एक प्रशासनिक सहायक, तीन भूभौतिकी विशेषज्ञ, एक समुद्र विशेषज्ञ और दो इलेक्ट्रॉनिक तकनीशियन हैं। मेक्रीरी कहते हैं, 'हमारे यहां दो व्यक्ति सप्ताह के सातों दिन 24 घंटे ड्यूटी पर होते हैं। लेकिन यह लोग दफ्तर में सातों दिन 24 घंटे नहीं होते।' यह लोग केंद्र में भूतल पर बने घरों में रहते हैं और प्रत्येक के पास दो पेजर होते हैं। जब भी कोई हलचल होती है तो ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों के पेजर सक्रिय हो जाते हैं और वे केंद्र में पहुंचकर इस हलचल का विश्लेषण शुरू कर देते हैं।

मेक्रीरी के अनुसार, 'हिंद महासागर में सुनामी के चलते हमारे कामकाज का विस्तार हो रहा है। भविष्य में हमारे दफ्तर में सातों दिन 24 घंटे कर्मचारी मौजूद होंगे। इससे हम स्थानीय हलचलों पर और जल्दी सक्रिय हो पाएंगे और दूरस्थ घटनाओं के बारे में भी अपेक्षाकृत जल्दी सचेत कर पाएंगे।'

पूरी दुनिया के 180 भूकंप मापन केंद्रों से इस केंद्र के पास आंकड़े पहुंचते हैं। इनमें से ज्यादातर भूकंप मापन केंद्र सहयोगी नेटवर्क के होते हैं जैसे कि 130 केंद्रों वाला वैश्विक भूकंप मापन नेटवर्क जिसे अमेरिकी भूगर्भ सर्वेक्षण और राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिष्ठान और कई क्षेत्रीय नेटवर्क मिलकर संचालित करते हैं। केंद्र के कंप्यूटर भूकंपों के आंकड़ों पर लगातार निगाह रखते हैं। भूकंप के बारे में पता चलते ही उसके उद्गम स्थल और कभी-कभी उसकी तीव्रता का पता लगाया जाता है। केंद्र के कर्मचारी इस तरह के भूकंपीय आंकड़ों को लगातार एकत्र करते हैं और उनका विश्लेषण करते हैं जिससे कि भूकंपों की पहचान और उनका वर्गीकरण किया जा सके। जब भी किसी बड़े भूकंप की आहट मिलती है तो केंद्र के कर्मचारी भूकंप के केंद्र के पास के समुद्री स्तर पर निगाह रखना शुरू कर देते हैं जिससे कि संभावित सुनामी लहरों के बारे में पता लगाया जा सके।

LUCY PEMONI © AP-WWP

सुमात्रा के पास आए भूकम्प से नष्ट हुआ क्षेत्र दिखाते हवाई के पैसिफिक सुनामी वार्निंग सैंटर के समुद्र विशेषज्ञ डेविड बखैल।

मेक्रीरी कहते हैं, 'इन सारी सूचनाओं और हमारे द्वारा विकसित और काम में लाई जा रही सांख्यिकी मॉडल विधियों के आधार पर हमने निर्णय प्रणाली बना रखी है जिससे तय करते हैं कि सुनामी चेतावनी जारी रखी जाए, इसे रद्द किया जाए या फिर और ज्यादा सख्त चेतावनी दी जाए।'

सबसे अहम बात यह है कि केंद्र जरूरतमंद लोगों तक जानकारी पहुंचाता है। मेक्रीरी के अनुसार, 'पिछले लगभग दस सालों में दूरस्थ हलचलों के लिए अपना शुरुआती बुलेटिन जारी करने में लगने वाला समय कुछ मामलों में पहले के एक घंटे के मुकाबले अब 10 से 20 मिनट रह गया है। स्थानीय हलचलों के लिए बुलेटिन जारी करने में 1997 में आधा घंटा लगता था जबकि अब यह काम आमतौर पर दो से चार मिनट में हो जाता है।'

यह केंद्र 1949 से कार्यरत है। पहले यह भूकंपीय समुद्री लहर चेतावनी केंद्र के रूप में काम करता था। मेक्रीरी बताते हैं, 'हवाई में 1946 में खतरनाक सुनामी लहरें आईं और 159 व्यक्तियों की मौत हो गई। उस समय चेतावनी देने की कोई प्रणाली नहीं थी। इसके अलावा यह आपदा एक अप्रैल को आई जब अमेरिकी लोग 'अप्रैल फूल' दिवस मनाते हैं और लोगों ने इसे मजाक समझा। इसके कारण सुनामी की चेतावनी को कुछ मामलों में लोगों ने 'अप्रैल फूल' का मजाक समझकर नजरंदाज कर दिया। इस त्रासदी के बाद अमेरिका ने यह चेतावनी केंद्र स्थापित किया।'

चिली में वर्ष 1960 में आए भूकंप के कारण आई सुनामी लहरों से प्रशांत क्षेत्र के ज्यादातर देश प्रभावित हुए। मेक्रीरी के अनुसार, 'इस आपदा में हवाई में 61 लोगों की जान चली गई। प्रशांत महासागर के उस पार स्थित जापान में 200 लोग मारे गए। सुनामी लहरों को जापान तक पहुंचने में 22 घंटे लगे थे।' इस आपदा के बाद 10 देशों ने मिलकर प्रशांत क्षेत्र में सुनामी चेतावनी तंत्र स्थापित किया और अमेरिका ने हवाई केंद्र को संचालन एवं नियंत्रण केंद्र बनाने की पहल की। अलास्का में 1964 में भूकंप के बाद उठी सुनामी लहरों के बाद पामर (अलास्का) में 1969 में पश्चिमी तट एवं अलास्का सुनामी चेतावनी केंद्र के रूप में सहयोगी केंद्र स्थापित किया गया। वह बताते हैं, 'यही चलन रहा है। किसी आपदा के आने पर सुनामी से निपटने की दिशा में कुछ और प्रगति हो जाती है।' □

लेखक: चेरिल पेलेरिन अमेरिकी विदेश विभाग के अंतर्राष्ट्रीय सूचना कार्यक्रम ब्यूरो की वाशिंगटन फाइल की संवाददाता हैं।